गीतरामायणम् में लोकगीतों का परम्परागत प्रयोग : एक अध्ययन

इंदुजा दुबे

शोध छात्रा
महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय
चित्रकूट, सतना,
मध्यप्रदेश

जगदगुरू स्वामी रामभद्राचार्य जी ने अपने महाकाव्य गीतरामायणम् में भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों में गाये जाने वाले लोकगीतों की धुनों को देवभाषा संस्कृत में आधार बनाकर लोकगीतों की विलुप्त होती परम्परा को नव जीवन प्रदान किया हैं। गीतरामायणम् में अवध क्षेत्र में गाये जाने वाले लोकगीतों जैसे – लचारी, कजरी, सोहर, बधाई, कहरवा, लोरी आदि के साथ ही अन्य प्रान्तों के प्रसिद्ध लोकगीतों की धुन को समाहित किया गया है। महाकवि ने गीतरामायणम् में सोहर गीत का बहुतायत गायन किया है, जो लोकजीवन में पुत्रजन्मोत्सव के अवसर पर गाया जाता है। राम के जन्म अवसर पर अनेक सोहर गीत गाये गये है। वस्तुतः सोहर को मंगलगीत भी कहा जाता है। हिन्दी भाषा–भाषी क्षेत्रों में यह गीत विशेष रुप से प्रचलित हैं। अवध क्षेत्र में सोहर गीत विलम्बित एवं द्रुत दोनों प्रकार की लयों में मिलते हैं। राम की जन्मभूमि होने के कारण यहॉ के सोहर गीतों में अधिकतर राम, सीता आदि पात्रों का वर्णन हुआ है। गीतरामायणम् महाकाव्य में महाकवि ने रामजन्म के अवसर पर अनेक सोहर और बधाई गीत रचा है, जो अत्यन्त उत्कृष्ट है। एक बधाई गीत द्रष्टव्य है–

" आद्याजागरीदयोध्याभागः प्रकटितो रघुनाथः ।
राज्ञी कौसल्यायाः कुक्षिः सुफलितासफलितो दशरथभागः ।
सफला सज्जन वा०छालतिका सफिलतो भूतलविभागः।
ऋष्यश्रृङ्गः पुत्रेष्टिः सफला सफलो वसिष्ठस्य त्यागः ।
सफला दिशा सुसफला विदिशा सफलो वैष्णवविरागः।
सफला गिरिधर मङ्गल कविता सफलः शुभानुरागः।।[1]

अर्थात आज श्री अयोध्या का सौभाग्य जग गया , यहॉ रघुकुल के नाथ श्री राम प्रकट हो गये। महारानी कौसल्या जी की कोख फलवती हो गयी, महाराज दशरथ का यज्ञ भी सफल हो गया। रघु अर्थात् जीवमात्र के स्वामी श्रीराम प्रकट हो गये। सज्जनों की इच्छा रूपी लता में आज फल लग गये, यह भारत भूमि का भाग कोशलदेश सफल हो गया, यहाँ संपूर्ण जीवों की प्रार्थना का विषय श्रीराम प्रकट हो गये। महर्षि ऋष्यश्रृंग की पुत्रेष्टि यज्ञ सफल हुई और गुरुदेव

वशिष्ट का त्याग भी सफल हुआ, क्योंकि इन्हीं दोनों ऋषियों के प्रयोग से जगत के रघु अर्थात् इष्टदेव स्वामी श्रीराम प्रकट हुए। आज दिशाएँ और विदिशाएँ सफल हो गयीं और श्री वैष्णवजनों का वैराग्य भी सफल हो गया। इन्हीं की प्रार्थना को पूर्ण करने के लिए भगवान श्रीराम प्रकट हुए हैं और यह बधाई गाकर गिरिधर कवि की कविता सफल हो गयी तथा इस कवि का कल्याणकारी श्रीराम अनुराग भी सफल हो गया, क्योंकि रघु अर्थात् संपूर्ण जीवों के नाथ अर्थात् आशीर्वाद रुप में यथेष्ट वरदान देने के लिए भगवान श्रीराम प्रकट हो गये हैं।

श्री अयोध्या में श्रीराम का जन्म हुआ है, चारों ओर बधाई के गीत गाये जा रहे हैं, सोहर गीत गाये जा रहे हैं। जातकर्म संपन्न होने पर नान्दीमुख श्राद्ध के साथ प्रभु श्रीराघव का नख काटती हुई, नाचती हुई नाइन कहती है–

" आदास्ये महीपते! कौसल्याकरकङ्कणम् ।
सुमित्रा करकङ्कणं कैकेयी करकङ्कणम् ॥
विभ्रती निजाङ्के राम लोकलोचनाभिरामम् ।
नापिती नमितनयना प्राह पङ्क्तिधोरणम् ॥
वृद्धेऽपि वयसि विधिसूनू कृपया विधाता।
विधये विधिज्ञो महाराजभङ्गलक्षणम् ॥
शिवस्यापि दुर्लभं भवत्कृते सुलभमिदम्।
पुत्ररत्नमेतत् प्राप्तवान् प्रभो विलक्षणम्॥
कोटिकामकमनीयं नखशिखरमणीयम्।
विशदविरुदमेतं महापुरुष लक्षणम् ॥
श्रृणु श्रृणु राजराज चक्रवर्तिमहाराज प्रीतिदानम्।
विना नानुमोदिष्ये सुतेक्षणम् ॥
गिरिधरप्रभुमय स्वाञ्चले निगूहयन्ती राजयन्ती।
विरराज रघुराज प्राङ्गणम् ।[2]

अर्थात् हे महाराज! आज मैं लाला के नख काटने के नेग में कौसल्या जी के हाथों का कड्कण (कंगन) लूँगी। इसी प्रकार कैकेयी के हाथ का कंगन और सुमित्रा जी के हाथ का कंगन भी लूंगी। हे महाराज! आपकी साठ हजार वर्ष की वृद्धावस्था में भी ब्रह्माजी के पुत्र वशिष्ठ जी की कृपा से विधि को जानने वाले विधाता ने यह मंगल क्षण उपस्थित किया है। हे स्वामिन! शिव

जी के लिए भी दुर्लभ यह क्षण आपको सुलभ हो गया, आपने सभी बालकों से विलक्षण यह पुत्ररत्न प्राप्त किया है। हे महाराज! यह बालक करोड़ों कामदेवों के भी इच्छा का विषय है, यह नखशिख पर्यन्त सुन्दर तथा निर्मल यश वाला है, इसमें तो महापुरुष साकेत बिहारी भगवान श्रीराम के सभी लक्षण दिख रहे हैं वही पीताम्बर, वही शार्ङ्गधनुष, वे ही दो तरकश, उनमें उसी प्रकार अक्षयबाण, उसी प्रकार वक्ष पर श्रीवत्सलंघन, उसी प्रकार वैजयन्ती माला और कौस्तुभमणि, वे ही किरीट–कुण्डलादि आभूषण, वही नील–मेघ जैसा श्यामल कलेवर, मुझे लगता है कि साकेतबिहारी श्रीराम ही अवध– बिहारी बन गये हैं। हे राजाओं के राजा ! हे चक्रवर्ती ''महाराज! सुनिये सुनिये जब तक मेरा नेग नहीं दीजियेगा, तब तक मैं पुत्र–दर्शन का अनुमोदन नहीं करूँगी। इस प्रकार गिरिधर कवि के प्रभु श्रीराघव को अपने आँचल में छिपाती हुई, नउनियाँ रघुराज दशरथ के प्रांगण को शोभित करती हुई स्वयं भी सुशोभित हो रही है।

गीतरामायणम् में अवध क्षेत्र में गाये जाने वाले लोकगीतों जैसे – लचारी, कजरी, सोहर, बधाई, कहरवा, लोरी आदि के साथ ही अन्य प्रान्तों के प्रसिद्ध लोकगीतों की धुन को समाहित किया गया है। गीतरामायणम् में सोहर गीत का बहुतायत गायन किया है, जो लोकजीवन में पुत्रजन्मोत्सव के अवसर पर गाया जाता है। वस्तुतः सोहर को मंगलगीत भी कहा जाता है।

जिस प्रकार चिलचिलाती धूप से व्याकुल लोग मेघ का गर्जन सुनकर प्रसन्न होते हैं, उसी प्रकार बालक श्रीराम का रोदन सुनकर सभी अयोध्यावासी प्रसन्न होकर नाचने लगते हैं और स्तुति गान करने लगते है। महाकवि एक सुन्दर बधाई गीत के द्वारा इसे चित्रित करते हैं–

'वदति वर्धापी आण्ड्गणेषु वदति वर्धापी आङ्गणेषु ।
अद्याङ्योध्यामिती राघवो लोका नृत्यन्तयाङ्गणेषु।।
अयोध्याकाः प्रेमभरमुदिताः सर्वे गायन्त्यङ्कणेषु।
कौसल्या कैकयी सुमित्रा मंगल रचनाः प्राङ्गणेषु ।।
नृपो वारयति हयराजरत्न क्वापि न लज्जारङ्गणेषु।
वर्धापनं गिरिधरो गयति भग्नस्तरलतरङ्गणेषु ।।[3]

अर्थात् आज महाराज दशरथ के आँगन में बधाई बज रही है, आज ही अयोध्या में श्रीराम प्रकट हुए हैं, लोग महाराज के आँगन में नाच रहे हैं। अयोध्यावासी प्रेम की निर्भरता से प्रसन्न हैं और सभी महाराज के आँगन में बालगीत गा रहे हैं। कौसल्या, कैकेयी और सुमित्रा जी राजप्रांगण में मंगलों से सजी हुई है। महाराज हाथी, घोड़ा, मणि लुटा रहे हैं, कहीं भी दरिद्रों में लज्जा नहीं है और भगवान की प्रेम तरंगों में मग्न हुआ गिरिधर कवि भी बधाई गा रहे हैं।

महाकवि ने श्रीराम की बरही पर एक सुन्दर बधाई गीत प्रस्तुत किया है, जिसमें सखी कहती है–

आद्यसख्यः सुखेनागता द्वादशी।
आगता द्वादशी स्वगता द्वादशी।।
बारहीति सामान्य लोके प्रसिद्धा बाराही श्रुतीव चागता द्वादशी।
शिशूनां चतुर्णां च सूतिका विशुद्धयै जाह्नवीकृतीव चागता द्वादशी।
नखच्छेदरीतिं नापितानी विधन्ते गङ्गलविभूतीवागता द्वादशी।
अङ्केषु गृहणीध्वं भाग्यं वृणीध्वं मज्जुल समूती वागता द्वादशी।
प्रभुस्पर्शमभिलषति गिरिधरः शरणागतिरिवागता द्वादशी।।

मिथिला के एक लोकगीत 'आज आरती उतारो सखी 'सियवर की। के आधार पर महाकवि ने यह गीत प्रस्तुत किया है –

'पश्य सखि! रामः शिशुः किल खेलति।
तल्पगतो जाह्नवी प्रवाहगतमिन्दीवरमवहेलति ॥
रहसि रहस्यमयो रभसा काकेन समं किल क्रीडति।
जम्बूफलपरिलुब्धमदनमधुकर शोभायामपि ब्रीडति।।
रहसि मुदाकमदं चालयंश्चपलो बालनिसर्गात् ।
वारयती चतुर्भक्तान् ननु चतुविधादवर्ण्गात् ।।
कौसल्या पश्यन्ती सुभगं बालं हदये ध्यायति।
स्वनन्दाय गिरा दैव्या गिरधरो गीतमपिगायति।।[5]

अर्थात् श्री अवध की एक सखी दूसरी सखी से कहती है– हे सखी! देखो शिशु श्रीराम खेल रहे हैं और वे पतंग पर विराजमान होकर गंगाजी के प्रवाह को प्राप्त नीले कमल को भी तिरस्कृत कर रहे हैं। स्वयं रहस्यमय होकर बाल– रूप श्रीराम काकभुशुण्डि के साथ खेल रहे हैं। वे जामुन के फल पर लुब्ध कामदेव के भ्रमर की शोभा को भी लज्जित कर रहे हैं। बालस्वभाव से एकान्त में चंचल श्रीराम हाथ–चरण चलाते हुए, अपने आर्त–जिज्ञासु– अर्थार्थी तथा ज्ञानी इन चारों प्रकार के भक्तों को अर्थ– धर्म–काम–मोक्ष इस पुरुषार्थ के चतुर्वर्गों से दूर कर रहे हैं। माता कौसल्या कल्याणकारी बालक श्रीराम को निहारती हुई हृदय में ध्यान कर रही हैं तथा अपने आनंद के लिए गिरिधर कवि भी हवेली परम्परा में संस्कृत में यह गीत गा रहे हैं।

महाकवि ने 'गीतरामायणम्' महाकाव्य में कजरी लोकगीतों का भी उत्कृष्ट प्रयोग किया है। यह गीत मुख तथा उत्तर प्रदेश और बिहार में गाये जाते हैं। इस लोकगीत के तीन रूप विशेषतः प्रचलित है– भोजपुरी कजरी, बनारसी कजरी तथा मिर्जापुरी कजरी। वस्तुतः कजरी का

नाम काजल सरीखे काले बादलों की कालिया के कारण हुआ है। यह गीत श्रावण मास में रिमझिम फुहार के साथ झूला झूलते हुए स्त्री–पुरुष झूम–झूमकर गाते हैं। भविष्य पुराण के उत्तरपर्व के बीसवें अध्याय में कजरी पर्व और हरिकाली व्रत का विस्तृत विवरण है। मार्कण्डेय पुराण और काशी के स्वामी देवतीर्थ कजरी पर्व का सम्बन्ध विन्ध्याचल देवी से मानते हैं, जो यशोदा के गर्भ से जन्मी थीं। भविष्य पुराण में एक कथा मिलती है, जब युधिष्ठिर के एक के उत्तर में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि एक बार शिव ने विष्णु आदि की उपस्थिति में नीलकमल–सी आभा वाली अपनी पत्नी हरिकाली को परिहास में काजल – सी कह दिया। हरिकाली ने इसे अपना अपमान समझा और अपनी श्याम कान्ति को हरित शाद्वल में छोड़कर भस्म हो गयीं। बाद में उन्होंने हिमालय के घर माँ गौरी के रूप में जन्म लिया। 'आल्हखण्ड' मैं कजरी के खेल का वर्णन है। संभवतः कजरी नृत्य और गीत भी उस समय अर्थात् बारहवीं शताब्दी में प्रचलित हो। कजरी में मुख्यतया कहरवा 'और 'दादरा' इन दो तालों का प्रयोग होता है। यह उल्लास के गीत हैं, इसमें चंचलता का भाव होने से दादरा का प्राधान्य होता है।[6]

''महाकवि ने मीरजापुरी कजली 'जामवंतजी के पद सीस नाइके, चले हनुमत हरपाई के, को आधार बनाकर यह गीत प्रस्तुत किया है–

''अद्य रामस्य दोला सुख दोल्यताम् ।
मानसं च सतां लोलताम् ।
श्रावणं सुखं विभातु संवृतं च खं प्रभातु ।
नभोनीलनीलनीलितं निचोलताम् ॥

कलां कोकिलाः कूजन्तु शुभे षट्पदाः गुज्जन्तु ।
दिव्यसर्गो निसर्गतो महोलताम् ।
माता पितृ.ां सुखानि भक्तिसल्लसन्मुखानि ।
प्राप्य सरयूस्तरड्गैः कल्लोलताम् ॥

कोसलेश कज्जलीं भक्तिभावनाज्जलिं।
वीक्ष्य गिरिधरकवेर्मनो विलोलताम्।[7]

अर्थात् आज श्रीराम का हिंडोला सुख से आन्दोलित हो और सन्तों का मन इस पर लहराता रहे। श्रावण सुशोभित हो, आकाश मेघो से घिरा हुआ शोभा पाये, आकाश मण्डल गहन नीलिमा से घिरा हुआ नीला अंगवस्त्र धारण कर ले। कोकिल कुहकें और भौरें गुंजार करें, देवताओं का स्वर्ग प्राकृतिक तेज से युक्त हो जाये।

भक्ति से सुशोभित भविष्यों वाली श्री राघव के पिता महाराज दशरथ एवं प्रभु की सभी माताओं का सुख प्राप्त कर भगवतर सरयू तरंगो से कल्लोलित हो उठें। इस प्रकार भक्ति की

भावनांजली से युक्त भगवान श्रीराम की कज्जली को देखकर गिरिधर कवि का मन चंचल होकर उसी में लग जाये।

झूले पर झूलते हूए अपने प्रिय पुत्र राघव को देखकर म नही मन मुस्कराती हूई देवी कौशल्या सखियों को मना करती हूई सी मधुर स्वर में कज्जली गीत गाने लगती हैं–

"मा मा दोलयतां सखिवर्गो रामो भीतो राजति हे।
शुभे श्रावणे विलसति गगनं मेघघटायां भग्न सखि हे।
गायति कज्जलीं खगवर वर्गो रामो भीतो राजति हे।
मन्दं कन्दो वर्षति सलिलं हृष्यति भावसुकलिलं सखि हे।
ईर्ष्यत्यस्मभ्यं सुस्वर्गो रामो भीतो राजति है।
द्रुतं चालयति परिजनवर्गो विस्तृतसुखापवर्गः सखि हे ।
नास्ते तस्मिन् बालविसर्गो रामो भीतो राजति हे।
गिरिधरप्रभुं दोलयति दोला क्रियतां शीघ्रमलोला सखि हे।
चिरं मोदतां वैष्णववर्गो रामो भीतो राजाति हे।[8]

'गीतरामायणम् महाकाव्य में महाकवि ने लोरी गीत का भी विधान किया है। लोरी का प्रयोग अपने शिशु को नींद आने के लिए माता द्वारा किया जाता है। माता कौसल्या श्रीराम को सुलाने हेतु लोरी गाती हैं। एक सुन्दर लोरी गीत दृष्टव्य है–

" त्वं शेष्वाऽहं गायेयं तव विधु वदनं ध्यायेयम्।
सुत पश्य शर्वरी माता निद्रासम्मुखमायाता ॥
सान्ध्ये त्वाम् सन्ध्यायेयं तव विधुवदनं ध्यायेयम्।
चन्द्रमास्समुदिती भातः मृदु वाति मलयवरवातः ।
तव चरितं निध्यायेयम् तव विद्युवदनं ध्यायेयम् ॥
तव मुखमभिलषति प्रमीला सुखमपि वितरति शिशुलीला।
गिरिधरगिर मनुध्यायेयं तव विधुवदनं ध्यायेयम् ।।[9]

अर्थात् माँ कौसल्या कहती हैं– हे वत्स राघव ! आप सो आयें, मैं गीत गाऊँ और आपके चन्द्रमुख का ध्यान करुं। हे पुत्र ! देखो रात्रिमाता भी निद्रा के निकट आ गयी हैं, आप सो जाइये। इस सांध्यबेला में मैं आपका सम्यक् ध्यान कर लूँ। देखिए, इस समय पूर्व उदित हुए चन्द्रमा शोभित हो रहे हैं और मन्द–मन्द मलय वायु भी चल रही है। आप शयन करें। मैं आपके चरित्र का बार–बार अभ्यास कारुं। हे राघव ! आपके मुख पर प्रमिला अर्थात् (जमुहाई) सुशोभित हो रही है और आपकी बाललीला सभी को सुख का वितरण कर रही है। मैं कवि गिरिधर की

वाणी का अनुशीलन कर लूं। आप शयन करें, मैं आपको शयनशीत सुनाऊँ और आपके श्रीचन्द्रमुख का ध्यान कर लूँ।

एक अन्य गीत में माँ कौसल्या लोरी गीत गा रही हैं। लोरी गीत द्रष्टव्य है–

"शेतां शेताम् कुमारो राघवः।
मम प्राणाधारो राघवः शेतां शेताम् ॥
हे दिनकर वंशविभूषण जितदूषण दूषणदूषणा
खलकमल तुषारो राघवः शेतां शेताम् ॥
कमलिनी वियुक्ता पत्या कुमुदिनी सभर्ता मत्या।
हृतभूतलभारो राघवः शेतां शेताम् ॥
अनुनयते त्वामथ निद्रा अभिनयते वदने तन्द्रा ।
सुखमङ्गल सारो राघवः शेतां शेताम् ॥
मा वार्तां कुरु दनुजारे अङ्गीकुरु शयनमधारे ।
हृतगिरिधर कारो राघवः शेतां शेताम् ॥"[10]

अर्थात् माँ कौसल्या लोरी के ढाल के गीत गा रही हैं। हे मेरे प्राणाधार ! रघुकुल में प्रकट सम्पूर्ण जीवों के हितैषी 'कुमार राघव! आप शयन करें, शयन करें। हे सूर्यकुल के आभूषण दूषण नामक राक्षस को जीतने वाले दोषों को भी नष्ट करने वाले प्रभु! आपराक्षस रूपी कमलों को नष्ट करने के लिए हिमपात के समान है। आप शयन कर लीजिये। कमलिनी अपने पति से बिछुड़ गयी है और कुमुदिनी सौभाग्य प्राप्ति के कारण चन्द्रमा 'से युक्त हो गयी है और आप संसार का भार हरने वाले हैं। अतः शयन कर लीजिये। देखिये, निद्रा आपका अनुनय कर रही है और तन्द्रा आपके मुख पर अभिनय कर रही है और आप सुखों और मंगलों के सारभूत वस्तु है, आप शयन कर लीजिये। हे दैत्यों के शत्रु ! आप वार्तालाप मत कीजिये, हे पापनाशक ! अब शयन स्वीकार कर लो। हे भगवान! आप कवि गिरिधर की भी यत्रकार को नष्ट करने वाले हैं, आप शयन करिये।

उत्तर प्रदेश के पूरबी क्षेत्र में गोंड (कहार) जाति के लोग निवास करते हैं, इनका कार्य सेवा करना है। विवाह आदि उत्सवों पर ये लोग एक विशेष प्रकार का नृत्य करते हैं, जिसे 'गोड़ऊनाच' कहते हैं। वाहनों की सुविधा अब नहीं थी, तो इस जाति के लोग डोली ढोते थे, पालकी बारात लेकर जाते थे। यह एक श्रमसाध्य कार्य था, इसलिए थकान मिटाने के लिए ये लोग गीत गाते थे, इनके गीत को ही 'कहरवा' गीत कंहा आता है। ये कहरऊआ नाच भी नाचते थे, जो 'हुडुक' नाम के वाद्य के साथ किया जाता था। जाति सम्बन्धी 'लोकगीतों में

'कहरवा' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। 'गीतरामायणम्' महाकाव्य में महाकवि ने 'कहरवा' लोकगीत का विधान किया है–

''सखि हे रामभद्र उन द्वादशवर्षः पुरारिचापं कथं त्रोटयते्।
आलि पश्य रामं घनश्याम कोमलराजकिशोरम् ॥
क्वेद धनुः कठिनसर्वाङ्ग शतशतकुलिश कठोरम्।
सखि हे। नितरामसम्भवोडनेन धनुष्कर्षः पुरारि चापं कथं त्राटयेते् ।
क्वेदं कच्छपपृष्ठनिष्ठुरं ' शङ्करधनुर्विशालम।
क्वेदं पश्यसि शिरिषकोमलं दशरथबालभराजमा
आलि! कथं शक्यः शिवकार्मुकविकर्षः पुरारि चापं कथं त्राटयेते् ।
नाशकुवन् दानवा देवा तिलमपि यच्चालियितुम्।
कथमलमहो मानवो रामो जनकपणं' पालयितुम् ।।
दृष्ट्वा जयते प्रसन्नतापकर्षः पुरारिचाप कथं त्रोटयेत्।
प्रसीदतां पार्वतीगणपती मृङ्यतु मृडो वागीशः।
तृष्णभज्जं विभनक्तु शिवधनु श्रीरामो वागीशः ॥
द्रष्टागिरिधरेण निजप्रभु पराक्रमोत्कर्षः पुरारिचापं कथं त्रोटयेत्।[11]

अर्थात् सखी गाने लगी– हे सुखी! श्रीरामभद्र अभी 12 वर्ष से भी अल्प अवस्था के हैं। ये शंकर जी का धनुष कैसे तोड़ सकेंगे? हे सखी! नीले बादल के समान श्यामल, कोमल राजकिशोर श्रीराम को देखो कहाँ ये इतने कोमल और कहाँ सर्वांग कठिन करोड़ों वज्रों से भी कठोर यह पिनाक इनके द्वारा इसका चढ़ाया जाना अत्यन्त असम्भव है। सभी देख रही हो कहाँ कछुए की पीठ के समान कठोर, विशाल शिवधनुष और कहा शिरीष पुष्प के समान सुकुमार दशरथ जी के बालहंस श्रीराम को देख रही हो। इनके द्वारा इस धनुष का आरोपण कैसे सम्भव है? अरी सखी। जिस धनुष को देवता और दानव तिलभर भी नहीं खिसका सके, वही 'धनुष खिसकाकर मनुष्याकृति श्रीराम जनक की प्रतिज्ञा को कैसे पूर्ण कर पायेंगे? यह विसंगति देखकर मेरी प्रसन्नता समाप्त होती जा रही है। गौरी–गणपति प्रसन्न हों और नन्दी बैल पर सवारी करने वाले शिवजी और ब्रहमा जी अनुकूल हो, जिससे श्रीराम पिनाक को तिनके के समान तोड़ दें और गिरिधर कवि भी अपने प्रभुखी राम का पराक्रम देखे।

ब्रह्मगीत 'बरसाने की गली कान्हा के वरसन को राधिका चली की ढाल में निबद्ध 'श्रीतरामायणम्' महाकाव्य का एक गीत दृष्टव्य है–

''मिथिलाधिपसुता गिरिजा पुरः पूजयितुमागता।
मङ्गल गायाद्भिर्वाद्यञ्च वादयाद्भिः।
प्रीयते तुरीयायाश्तूर्यं नादयाद्भिः।

सखीवृन्दैर्वृता गिरिजां पुरःपूजयितुमागता ॥
पद्भ्यां चलन्तीव हंसी हसन्ती।
रूपदीपिकेव पथि परमा लसन्ती ॥
भक्तिभावन्विता गिरिजां पुरः पूजयितुमागता ।
प्रकृत्या विशुद्धाऽपि सरोवरे स्नाता ॥
पीतपटं परिदधाना नियमे निष्णाता।
गौरी मन्दिरमिता गिरिजां पुरः पूजयितुमागता ।
प्रीतिपूर्वं पूर्वेद्युः स्वयम्बरा सुस्त्रग्धरा।
अपुपुजत् प्रीत्या पार्वती सा पतिम्बरा।।
विश्वविश्ववन्दिता गिरिजां पुरः पूजयितुमागता ।
षोडशोपचारैः पूजयित्वा भवानीम् ।
वरं बब्रे रघुवरं सीता भृडानीम्।
गिरिधाराभिनन्दिता गिरिजां पुरः पूजयितुमागता ॥''[12]

अर्थात् मिथिलाधिप राजकुमारी सीता जी गिरिजापूजन के लिए पधार आई हैं। मंगलगान करती तथा बाजे–बजाती एवं तुरीयावस्था रूपिणी सीता जी की प्रसन्नता के लिए तूर्य अर्थात् तुरुही–वाद्य का उद्घोष करती हुई सखी समूहों से घिरी जनकनन्दिनी जी गिरिजा पूजन को पधार आयी हैं। श्रीचरणों से चलती हुई हंसिनी का परिहास करती हुई–सी मार्ग में श्रेष्ठरूप दीपमालिका की भाँति भक्तिभाव से युक्त हैं। स्वभावतः पवित्र होकर भी जानकी जी ने सरोवर में स्नान किया, नियम से निपुण मैथिली की मे पीला वस्त्र धारण किया और पार्वती जी के मंदिर में आयीं। सम्पूर्ण विश्व की वन्दनीया अगले दिन स्वयंवरं में उपस्थित होने वाली सुन्दरमालिका धारण की हुई। जनक नन्दिनी जी ने अनुरूप वर के वरण की इच्छा से प्रेमपूर्वक पार्वती जी की पूजा की। गिरिधर कवि के द्वारा अभिनन्दित भगवती सीता जी ने षोडशोपचार ने पार्वती जी की पूजा कर के उनसे रघुवर श्रीराम को ही वररूप में वरदान माँगा।''

अतः कहा जा सकता है कि महाकवि स्वामी राम भट्टाचार्य जी ने अपने 'गीतरामायणम्' महाकाव्य में अवसर अनुसार विविध लोकगीतों का संस्कृत भाषा में विधान किया है। बधाई गीत, कजरी गीत, लोरी गीत, कहरवा गीत तथा ब्रजगीत के कुछ उदाहरण यहाँ उपस्थित हुए हैं। इन गीतों के भाव एवं लय आदि यहाँ उसी रूप में यथावत् हैं, किन्तु भाषा परिवर्तित है। स्वामी जी विभिन्न अवसरों पर इन गीतों को उसी रूप में, उसी गेय–विधान के साथ गाते हैं और लोग मन्त्र मुग्ध होकर सुनते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची :–

1. स्वामी श्री रामभद्राचार्य– गीतरामायणम्, जगद्गुरुरामभद्राचार्य– विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उ० प्र०, संस्करण – 2011, श्लोक– 1.2.26.
2. वही, श्लोक 1.2.18.
3. वही ,श्लोक – 1.2.11
4. स्वामी श्रीरामभद्राचार्य– गीतरामायणम्, जगद्गुरुरामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उ०प्र०, संस्करण– 201, श्लोक– 1.2.34.
5. वही, श्लोक –1.3.13.
6. जैन, डॉ० शान्ति– लोकगीतों के संदर्भ और आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण–1999, पृ० – 218.
7. स्वामी रामभद्राचार्य – गीतरामायणम्, जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उ०प्र०, संस्करण–2011, श्लोक– 1.3.18.
8. वही, श्लोक –1.3.19.
9. वही, श्लोक– 1.4.9.
10. स्वामी रामभद्राचार्य – गीतरामायणम्, जगद्गुरुरामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उ०प्र०, संस्करण – 2011 श्लोक – 1.4.10.
11. वही, श्लोक – 1.7.32.
12. वही, श्लोक – 1.8.4.